اَطِيۡعُوا اللّٰهَ وَاَطِيۡعُوا الرَّسُوۡلَ وَاُوۡلِى الۡاَمۡرِ مِنۡكُمۡ

रूएदाद जलसा दुआ

जो हज़रत सय्यिदिना व इमामना जनाब मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब मसीह मौऊद-व-महदी मा'हूद की तहरीक पर दारुल अमान क़ादियान में

दिनांक 2 फरवरी, 1900 ई. को आयोजित हुआ

लेखक

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी
मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम

नाम पुस्तक	: रूएदाद जलसा दुआ
Name of book	: Ru-e-daad Jalsa Dua
लेखक	: हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम
Writer	: Hazrat Mirza Ghulam Ahmad Qadiani Masih Mauud Alaihissalam
अनुवादक	: डा अन्सार अहमद पी.एच.डी आनर्स इन अरबिक
Translator	: Dr Ansar Ahmad, Ph.D, Hons in Arabic
टाइपिंग, सैटिंग	: मलिहा सबा गौरी
Typing Setting	: Maliha Saba Gouri
संस्करण तथा वर्ष	: प्रथम संस्करण (हिन्दी) 2018 ई०
Edition. Year	: 1st Edition (Hindi) 2018
संख्या, Quantity	: 1000
प्रकाशक	: नज़ारत नश्र-व-इशाअत, क़ादियान, 143516 ज़िला-गुरदासपुर (पंजाब)
Publisher	: Nazarat Nashr-o-Isha'at, Qadian, 143516 Distt. Gurdaspur, (Punjab)
मुद्रक	: फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रेस, क़ादियान, 143516 ज़िला-गुरदासपुर, (पंजाब)
Printed at	: Fazl-e-Umar Printing Press, Qadian, 143516 Distt. Gurdaspur (Punjab)

रूएदाद जलसा दुआ

जो 2 फ़रवरी 1900 ई को ईदुल फ़ित्र के दिन हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की तहरीक पर बर्तानवी सरकार की सफ़लता की दुआ के लिए एक सार्वजनिक जलसा आयोजित हुआ। जिसमें क़ादियान और निकट देहात के अतिरिक्त अफ़ग़ानिस्तान, इराक़, मद्रास, कश्मीर और हिन्दुस्तान के विभिन्न ज़िलों के लोग एक हज़ार की संख्या में उपस्थित हुए। क़ादियान के पश्चिम में पुरानी ईदगाह में ईद की नमाज़ अदा की गई। हज़रत मौलवी नूरुद्दीन रज़ी अल्लाह तआला अन्हु ने ईद ईदुल फ़ित्र की नमाज़ पढ़ाई और नमाज़ के बाद हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अत्युत्तम एवं प्रभावी ख़ुत्बा पढ़ा। जिसमें सूरह 'अन्नास' की बारीक और रहस्यों और अध्यात्म ज्ञानों से भरपूर तफ़्सीर वर्णन करते हुए मजाज़ी शासकों के अधिकारों का वर्णन किया तथा बर्तानवी सरकार के उपकारों के कारण उन की वफ़ादारी के लिए नसीहत की और ईद के खुतबे के बाद ट्रान्सवाल के युद्ध में अंग्रेजों की विजय के लिए दुआ की तहरी करके सब ने जोश और निष्कपटता पूर्वक दुआ की और इसी के अनुसार इस आयोजन को **"जलसा दुआ"** का नाम दिया गया और बर्तानवी सेना के घायलों के लिए चंदा भेजने की भी ज़ोरदार तहरी की और जब पांच सौ रुपया चंदा एकत्र हो गया तो वह सरकार के संबंधित विभाग को भेज दिया गया। अन्त में हम अल्लाह तआला से जिस ने इस युग की हिदायत के लिए कृपा और दया की दृष्टि करते हुए हज़रत मसीह

मौऊद अलैहिस्सलाम को अवतरित किया, अत्यंत विनय एवं विनम्रता और गिड़गिड़ाते हुए दुआ करते हैं कि वह उन रूहानी ख़ज़ानों के पाठकों को प्रत्येक प्रकार के आध्यात्मिक और भौतिक इनाम प्रदान करें और अपनी विशेष कृपा एवं दया का वारिस बनाए तथा ये रूहानी ख़ज़ायन उनके लिए और उनकी भावी नस्लों के लिए अनश्वर खैर और बरकत का कारण हो। आमीन

खाकसार

जलालुद्दीन शम्स
2 नवम्बर 1964 ई

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलिहिलकरीम

जलसा-ए-दुआ का वृत्तान्त

जो हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब की तहरीक पर दारुल अमान क़ादियान में दिनांक 2 फरवरी 1900ई. को आयोजित हुआ।

इससे पूर्व कि हम रूएदाद (वृत्तान्त) को दर्शकों के सामने प्रस्तुत करें प्रथम इस बात का जतला देना आवश्यक समझते हैं कि जनाब इमामुल मुत्तक़ीन (संयमियों के पेशवा) पृथ्वी पर ख़ुदा की हस्ती का प्रमाण हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब रईस क़ादियान युग के इमाम अलैहिस्सलातु वस्सलाम जिस प्रकार सामान्य लोगों के शुभ चिन्तक हैं उसी प्रकार वह समय की सरकार के सच्चे हृदय से वफ़ादार और शुभ चिन्तक हैं। यह उन्हीं का मुबारक अस्तित्व है। जिसने प्रजा के अधिकारों तथा सरकार के अधिकारों को प्रकाशमान दिन के समान खोल कर दिखा दिया और अपनी जमाअत के दिलों में इस उपकारी सरकार के उपकारों को ऐसे प्रभावी एवं हर प्रकार की में कूट-कूट कर भर दिया जिस से इस सरकार के साथ कपटपूर्ण रंग का धब्बा इस पवित्र जमाअत के हृदयों से एक दम ऐसा उड़ गया कि उसका नामो निशान तक न रहा। यह वही रंग था जो पक्षपाती और मूर्ख मुल्लाओं की संगत से बेचारे सादा दिल और अनभिज्ञ

मुसलमानों की प्रकृति में चढ़ता जाता है।

और वह इसी प्रकार सच्चे हृदय से अंग्रेज़ी सरकार के वफादार और कृतज्ञ हो गए हैं जिस प्रकार किसी इस्लामी सरकार के होने चाहिए थे।

यह बात स्वयं सरकार पर भी गुप्त नहीं कि आप का खानदान हमेशा से इस सरकार का वफ़ादार और प्राण न्योछावर करने वाला रहा है और हर आड़े समय पर अपनी हैसियत से बढ़कर सेवाएं करता रहा है जिससे सरकार के अधिकारी स्वयं परिणाम निकाल सकते हैं कि जनाब मिर्ज़ा साहिब के खानदान को पहले ही से इस सरकार से स्वजनता के संबंध प्राप्त हैं। यद्यपि हज़रत साहिब के बुज़ुर्ग सिपाहियों और सवारों से सहायता करते थे तथापि ये अपने रंग में दर्द भरी दुआओं के साथ सेना से सहायता देने में कोताही नहीं करते। अतः जब कभी अफ़ग़ानिस्तान की सीमा या बिलोचिस्तान या बर्मा में युद्ध और लड़ाई हुई तो यह दुआ करते रहे। हज़रत माननीय महारानी क़ैसरा की जुबली पर बड़ी ख़ुशी मनाई और जलसा आयोजित करके उनकी दीर्घ आयु और प्रतिष्ठा के लिए ख़ुदा से दुआ की और वह अपनी उस जीवन-पद्धति में जो मात्र फ़क़ीरों वाला जीवन है और हमेशा से एकान्तवास उनकी आदत हो रही है दुआ के अतिरिक्त और किस प्रकार अपनी उपकारी और मेहरबान सरकार की सहायता कर सकते हैं। इसलिए इस अवसर पर भी जब कि सरकार को एक ऐसी क़ौम से जिसे गुप्त तौर पर अन्य क़ौमें सहायता दे रही हैं, जिस से हमारी सरकार को अकारण कष्ट पहुंच रहा है, इस प्रजा के हमदर्द ने उचित समझा कि विजय के लिए दुआ की जाए। अतः 1 फरवरी को हज़रत

अक़्दस ने अपनी जमाअत के लोगों को जो अफ़ग़ानिस्तान, इराक़ तथा हिन्दुस्तान के विभिन्न नगरों जैसे मद्रास, कश्मीर, शाहजहांपुर, जम्मू, मथुरा, झंग, मुल्तान, पटियाला, कपूरथला, मालेर-कोटला, लुधियाना, शाहपुर, सियालकोट, गुजरात, लाहौर अमृतसर, गुरदासपुर इत्यादि ज़िलों से आए हुए थे आदेश हुआ कि हम चाहते हैं कि ईद के दिन अंग्रेज़ी सरकार की सफलता के लिए दुआ की जाए जिस को सब ने सुन कर प्रसन्नता पूर्वक पसन्द किया।

इसी आधार पर ईद के दिन लगभग 8 बजे हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपनी जमाअत के उस विशाल मैदान में जो क़स्बा क़ादियान के पश्चिम में है और जो पुरानी ईदगाह है गए और 9 बजे तक दूर और क़रीब के देहात के लोग भी वहां एकत्र होते रहे। फिर युग के विद्वान समय के एकमात्र हज़रत मौलाना मौलवी नूरुद्दीन साहिब ने ईदुलफित्र की नमाज़ पढ़ाई और नमाज़ से निवृत्त होने के पश्चात् आलीजनाब हज़रत इमामुज़्ज़मान ने खड़े होकर अत्यन्त सरसता एवं सुवोधतापूर्वक ख़ुत्बा पढ़ा और भाषण इतना प्रभावी था कि सब लोग जो संख्या में हज़ार से कम न थे पूर्ण ध्यान से सुन रहे थे। इतना स्पष्ट और समझने में सरल था कि देहाती आदमी भी जो चौपायों के समान जीवन व्यतीत करते हैं प्रभावित होकर बोल उठे। हज़रत अक़्दस सब सच कह रहे हैं। इस भाषण में जैसे कि असल भाषण से स्पष्ट होगा अल्लाह तआला के साथ-साथ सांसारिक अधिकारियों के अधिकार का कैसा चित्रण किया गया है और किस प्रकार प्रजा को बताया गया है कि इस अंग्रेज़ी सरकार के हम मुसलमानों पर कितने उपकार हैं और हम मुसलमान अपने क़ुर्आन की

दृष्टि से किस सीमा तक सरकार की वफ़ादारी और प्राण न्योछावर करने के लिए पाबन्द किए गए हैं। क्या कोई संसार में है जो इस प्रकार से धर्म के अनुसार बर्तानवी सरकार के अधिकार सच्चे हृदय और नेक नीयत के साथ सिद्ध कर सके। यह उसी जवांमर्द का काम है जिसने अपनी जमाअत के हृदयों में सरकार के संबंध में सच्चा प्रेम बैठा दिया है और प्राय: अपनी जमाअत को लिखित तथा मौखिक तौर पर बल देकर फ़रमाया कि यदि तुम में से कोई एक राई के दाने के बराबर भी अपनी सरकार से छल पूर्वक आचरण अपनाएगा वह हमारी जमाअत में नहीं गिना जाएगा और वह ख़ुदा तथा रसूल का अवज्ञाकारी होगा। क्योंकि हम लोग बर्तानवी सरकार की किसी व्यक्तिगत लाभ अथवा स्वार्थ परायणता के आधार पर प्रशंसा और यशोगान नहीं करते अपितु इस्लाम धर्म की दृष्टि से हम मामूर हैं कि हम अत्यन्त आन्तरिक सफाई और सच्चे हृदय से कर्म और कथन से वफ़ादारी का सबूत दें। हम किसी उपाधि, ज़मीन या जागीर को प्राप्त करने के लिए छलपूर्ण चालें या चापलूसियां करना अवैध समझते हैं। चूंकि भाषण अपने मूल रूप में नीचे लिखा जाता है. इसलिए हमें अधिक लिखने की आवश्यकता नहीं।

★

ख़ुत्बा

जनाब मसीह मौऊद अलैहिसलातु वस्सलाम
जो ईदुल फ़ित्र की नमाज़ के बाद पढ़ा गया

मुसलमानों को अल्लाह तआला का बहुत धन्यवाद करना चाहिए जिसने उनको एक ऐसा धर्म प्रदान किया है जो ज्ञान और व्यावहारिक तौर पर हर प्रकार की ख़राबी और घृणित बातों से पवित्र है यदि मनुष्य ध्यान पूर्वक देखे तो उसे ज्ञात होगा कि वास्तव में समस्त प्रशंसाओं एवं विशेषताओं का अधिकारी अल्लाह तआला ही है तथा कोई इन्सान या सृष्टि निश्चित और वास्तविक तौर पर प्रशंसा और स्तुति की हक़दार नहीं है। यदि मनुष्य किसी प्रकार के स्वार्थ की मिलावट के बिना देखे तो उस पर अत्यन्त स्पष्ट तौर पर खुल जाएगा कि कोई व्यक्ति जो प्रशंसा के योग्य ठहराया जाता है वह या तो इसलिए योग्य हो सकता है कि किसी ऐसे युग में जबकि कोई अस्तित्व न था और न किसी अस्तित्व की ख़बर थी वह उसका पैदा करने वाला हो या इस कारण से कि ऐसे युग में कि कोई अस्तित्व न था और न मालूम था कि अस्तित्व और अस्तित्व की अनश्वरता तथा स्वास्थ्य-सुरक्षा और जीवन की स्थापना के लिए क्या-क्या सामान आवश्यक हैं। उसने वे सब सामान उपलब्ध किए हों या ऐसे युग में कि उस पर बहुत से संकट आ सकते थे उसने दया की हो और उसे सुरक्षित रखा हो और या इस कारण से प्रशंसा के योग्य हो सकता है

कि मेहनत करने वाले की मेहनत को नष्ट न करे और मेहनत करने वालों के अधिकारों को पूर्ण रूप से अदा करे। यद्यपि बाह्य तौर पर मज़दूरी करने वाले के अधिकारों का देना बदला है परन्तु ऐसा व्यक्ति भी उपकारी हो सकता है जो पूर्ण रूप से अधिकारों को अदा करे। ये विशेषताएं उच्च श्रेणी की हैं जो किसी को प्रशंसा एवं स्तुति के योग्य बना सकती हैं। अब विचार करके देख लो कि वास्तविक तौर पर इन सब प्रशंसाओं के योग्य केवल अल्लाह तआला ही है जो पूर्ण रूप से इन विशेषताओं से प्रशंसित है अन्य किसी में ये विशेषताएं नहीं हैं।

प्रथम - देखो उत्पत्ति और प्रतिपालन की विशेषता। यह विशेषता यद्यपि मनुष्य गुमान कर सकता है कि माता-पिता तथा अन्य उपकारियों की इच्छाएं और उद्देश्य होते हैं जिन के आधार पर वे उपकार करते हैं। इस पर तर्क यह है कि उदाहरणतया बच्चा स्वस्थ, सुन्दर, शक्तिशाली पैदा हो तो माता-पिता को प्रसन्नता होती है और यदि लड़का हो तो फिर यह प्रसन्नता और भी बड़ी होती है। ढोल बजाए जाते हैं, परन्तु यदि लड़की हो तो जैसे वह घर मातम घर और शोक का दिन हो जाता है और स्वयं को मुंह दिखाने के योग्य नहीं समझते। कभी-कभी कुछ मूर्ख विभिन्न उपायों से लड़कियों को मार देते या उनके पालन-पोषण में कम ध्यान देते हैं और यदि बच्चा लुंजा, अंधा, अपाहिज पैदा हो तो चाहते हैं कि वह मर जाए और प्राय: आश्चर्य नहीं स्वयं भी जान की विपदा समझ कर मार देते हों। मैंने पढ़ा है कि यूनानी लोग ऐसे बच्चों को जान-बूझ कर मार देते थे बल्कि उनके यहां शाही कानून था कि यदि कोई बच्चा निकम्मा, अपाहिज, अंधा इत्यादि पैदा हो तो उसे तुरन्त मार दिया जाए। इस से

साफ पाया जाता है कि मानवीय विचारों में पोषण और देखभाल के साथ व्यक्तिगत और स्वार्थ संबंधी उद्देश्य मिले हुए होते हैं। परन्तु अल्लाह तआला की इतनी सृष्टि का (जिसकी कल्पना और वर्णन से कल्पना और जीभ असमर्थ है और जो पृथ्वी और आकाश में भरी पड़ी है) ख़ल्क और प्रतिपालन से कोई मतलब नहीं है। वह माता-पिता की तरह सेवा और जीविका नहीं चाहता अपितु उसने सृष्टि को केवल प्रतिपालन की मांग से पैदा किया है। प्रत्येक व्यक्ति मान लेगा कि पौधा लगाना फिर सिंचाई करना और उसकी देख भाल करना और फलदार वृक्ष होने तक सुरक्षित रखना एक बड़ा उपकार है। अत: मनुष्य और उसकी हालत तथा देख भाल पर विचार करो तो ज्ञात होगा कि ख़ुदा तआला ने कितना बड़ा उपकार किया है कि इतने इन्क़िलाब और विवशता के समयों में कैसे-कैसे परिवर्तनों में उस की सहायता की है।

दूसरा पहलू जो अभी मैंने वर्णन किया है अस्तित्व की पैदायश से पूर्व ऐसे सामान हों कि सामाजिक जीवन और शक्तियों के काम के लिए पूरा सामान मौजूद हो। देखो हम अभी पैदा ही न हुए थे कि सामान पहले ही कर दिया। प्रकाशमान सूर्य जो अब चढ़ा हुआ है जिस के कारण सामान्य रूप से प्रकाश प्रसारित हो रहा है और दिन चढ़ा हुआ है। यदि न होता तो क्या हम देख सकते थे या प्रकाश के माध्यम से जो लाभ और फ़ायदे हमें पहुंचे हैं हम किस माध्यम से प्राप्त कर सकते। यदि सूर्य और चन्द्रमा या और किसी प्रकार का प्रकाश न होता तो आंखों की ज्योति बेकार होती। यद्यपि आंखों में देखने की एक शक्ति है परन्तु वह बाह्य प्रकाश के बिना व्यर्थ है।

तो यह कितना बड़ा उपकार है कि शक्तियों से काम लेने के लिए उसने उन आवश्यक सामानों को पहले से उपलब्ध कर दिया, और फिर यह उसकी कितनी दया है कि उसने ऐसी शक्तियां दी हैं और उन में ऐसी योग्यताएं रख दी हैं जो मनुष्य की पूर्णता और गन्तव्य तक पहुंचने के लिए यथासंभव आवश्यक हैं। मस्तिष्क में, स्नायुयों में, रगों में ऐसी विशेषताएं रखी हैं कि मनुष्य उन से काम लेता है और उन्हें पूर्ण कर सकता है। इसलिए कि शक्तियों को पूर्ण करने का सामान साथ ही रख दिया है। यह तो आन्तरिक व्यवस्था का हाल है कि प्रत्येक शक्ति उस उद्‌देश्य और हित से पूर्ण अनुकूलता रखती है जिसमें मनुष्य का कल्याण है और बाह्य तौर पर भी ऐसी ही व्यवस्था रखी है कि हर व्यक्ति जिस प्रकार का पेशा रखता है उसके यथायोग्य सामान और औज़ार अस्तित्व से पूर्व उपलब्ध कर रखे हैं। उदाहरणतया यदि कोई जूता बनाने वाला है तो उसको चमड़ा और धागा न मिले तो वह कहां से लाए और अपने पेशे को कैसे पूरा करे। इसी प्रकार दर्ज़ी को यदि कपड़ा न मिले तो क्योंकर सिए। इसी प्रकार हर प्राणी का हाल है वैद्य कैसा ही निपुण और विद्वान हो परन्तु यदि दवाएं न हों तो वह क्या कर सकता है। बड़ा सोच-विचार करके एक नुस्ख: लिखकर देगा परन्तु बाज़ार में वह दवा न मिले तो क्या करेगा। ख़ुदा का कितना फ़ज़्ल (कृपा) है कि एक ओर तो उसने ज्ञान दिया है और दूसरी ओर वनस्पतियां, स्थूल पदार्थ, जीवधारी जो रोगियों के यथायोग्य थे पैदा कर दिए हैं और उनमें भिन्न-भिन्न प्रकार के गुण रखे हैं जो हर युग में अप्रत्याशित आवश्यकताओं के काम आ सकते हैं। तो ख़ुदा तआला ने कोई वस्तु भी बेफ़ायदा पैदा

नहीं की। तिब्ब की पुस्तकों में लिखा है कि यदि किसी का पेशाब बन्द हो जाए तो कभी जूं को इहलील में देने से पेशाब हो जाता है। मनुष्य इस वस्तुओं की सहायता से कहां तक लाभ प्राप्त करता है, कोई अनुमान लगा सकता है? कदापि नहीं। अपितु किसी की कल्पना में नहीं आ सकता।

फिर चौथी बात मेहनत का बदला है। इसके लिए भी ख़ुदा की कृपा की आवश्यकता है। उदाहरणतया मनुष्य कितनी मेहनत और परिश्रम से खेती करता है। यदि ख़ुदा तआला की सहायता उसके साथ न हो तो अपने घर में अनाज कैसे ला सके। उसी की कृपा से अपने समय पर हर एक चीज़ होती है। अत: अब क़रीब था कि इस सूखा पड़ने में लोग मर जाते परन्तु ख़ुदा ने अपनी कृपा से वर्षा कर दी और सृष्टि के बहुत से भाग को संभाल लिया। निष्कर्ष यह कि सर्वप्रथम व्यक्तिगत तौर पर सर्वांगपूर्ण ख़ुदा तआला ही प्रशंसा के योग्य है। उसकी तुलना में किसी अन्य का व्यक्तिगत तौर पर कोई भी अधिकार नहीं। यदि किसी अन्य को प्रशंसा का अधिकार है तो केवल किसी के सहारे से है। यह भी ख़ुदा तआला की दया है कि इसके बावजूद कि वह भागीदार रहित अकेला है। परन्तु उसने माध्यम के तौर पर कुछ को अपनी प्रशंसाओं में सम्मिलित कर लिया है। जैसे इस पवित्र सूरह में वर्णन फ़रमाया है-

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ۔ مَلِكِ النَّاسِ۔ اِلٰهِ النَّاسِ۔
مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ الْخَنَّاسِ۔ الَّذِىْ يُوَسْوِسُ فِىْ صُدُوْرِ
النَّاسِ۔ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ۔ (अन्नास-2 से 3)

इसमें अल्लाह तआला ने प्रशंसा के वास्तविक अधिकार रखने

वाले के साथ प्रशंसा के अस्थायी अधिकार रखने वाले का भी सांकेतिक तौर पर वर्णन किया है। और यह इसलिए किया है कि उच्च कोटि के शिष्टाचार पूर्ण हों। अत: इस सूरह में तीन प्रकार के अधिकार वर्णन किए हैं। **प्रथम-** फ़रमाया कि तुम शरण मांगो अल्लाह से जो सर्वांगपूर्ण विशेषताओं का संग्रहीता है और जो प्रतिपालक है लोगों का और मालिक भी है और मा'बूद (उपास्य) और वास्तविक उद्देश्य भी है। यह सूरह इस प्रकार की है कि इसमें असल तौहीद (ऐकेश्वरवाद) को तो स्थापित रखा है परन्तु साथ यह भी संकेत किया है कि दूसरे लोगों के अधिकार भी नष्ट न करें जो इन नामों के प्रतिबिम्ब के तौर पर घोतक हैं। रब्ब के शब्द में संकेत है कि यद्यपि वास्तविक तौर पर ख़ुदा ही पोषण करने वाला और पूर्णता तक पहुंचाने वाला है परन्तु अस्थायी और प्रतिबिम्ब तौर पर दो और भी अस्तित्व हैं जो प्रतिपालन के द्योतक हैं। एक शारीरिक तौर पर दूसरा रूहानी (आध्यात्मिक) तौर पर। शारीरिक तौर पर माता-पिता हैं और रूहानी तौर पर मुर्शिद और पथ-प्रदर्शक है। अन्य स्थान पर विस्तारपूर्वक वर्णन किया है

وَقَضٰى رَبُّكَ اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّآ اِيَّاهُ وَبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا

(बनी इस्राईल-24)

अर्थात् ख़ुदा ने यह चाहा है कि किसी दूसरे की उपासना न करो और माता-पिता से उपकार करो। वास्तव में कैसा प्रतिपालन है कि इन्सान बच्चा होता है और किसी प्रकार की शक्ति नहीं रखता। उस हालत में मां क्या-क्या सेवाएं करती है और पिता उस हालत में मां के कठिन कार्यों में कैसा अभिभावक होता है। ख़ुदा तआला

ने केवल अपनी कृपा से कमज़ोर सृष्टि की देखभाल के लिए दो महल पैदा कर दिए हैं और अपने प्रेम के प्रकाशों से उनमें प्रेम का एक प्रतिबिम्ब डाल दिया है। परन्तु स्मरण रखना चाहिए कि मां-बाप का प्रेम अस्थायी है और ख़ुदा तआला का प्रेम वास्तविक है और जब तक हृदयों में ख़ुदा तआला की ओर से उसका इल्क़ा ⁕ न हो कोई मनुष्य चाहे दोस्त हो या कोई समान श्रेणी का हो या कोई अधिकारी हो किसी से प्रेम नहीं कर सकता। और यह ख़ुदा के पूर्ण प्रतिपालन का राज़ है कि माता-पिता बच्चों से ऐसा प्रेम करते हैं कि उनके पालन पोषण में हर प्रकार के दुख बड़ी प्रसन्नता पूर्वक सहन करते हैं, यहां तक कि उनके जीवन के लिए मरने से भी संकोच नहीं करते। तो ख़ुदा तआला ने उच्च कोटि के शिष्टाचार पूर्ण करने के लिए रब्बिन्नास के शब्द में माता-पिता और मुर्शिद (पथ-प्रदर्शक) की ओर संकेत किया है ताकि इस मजाज़ी (अवास्तविक) और मौजूद कृतज्ञता के सिलसिले से वास्तविक रब्ब और पथ-प्रदर्शक की कृतज्ञता में क़दम उठाएं। इसी राज़ के हल की यह कुंजी है कि इस पवित्र सूरह को रब्बिन्नास से प्रारंभ किया है। इलाहिन्नास से प्रारंभ नहीं किया चूंकि रूहानी मुर्शिद ख़ुदा तआला की इच्छानुसार उसकी सामर्थ्य और हिदायत से प्रशिक्षण करता है इसलिए वह भी इसमें सम्मिलित है। फिर इसमें दूसरा टुकड़ा मलिकिन्नास है। अर्थात् तुम शरण मांगो ख़ुदा के पास जो तुम्हारा बादशाह है। यह एक और संकेत है ताकि लोगों को सामाजिक संसार के सिद्धान्त

⁕ **इल्क़ा** - ख़ुदा तआला की ओर से हृदय में अनायास किसी विचार का आना। (अनुवादक)

से परिचित किया जाए और सभ्य बनाए जाए। वास्तविक तौर पर तो अल्लाह तआला ही बादशाह है परन्तु इसमें संकेत है कि ज़िल्ली (प्रतिबिम्ब) तौर पर बादशाह होते हैं और इसलिए इसमें सांकेतिक तौर पर मालिक समय के अधिकारों की देखभाल की ओर संकेत है। यहां काफ़िर और मुश्रिक और एकेश्वरवाद बादशाह अर्थात् किसी प्रकार का बंधन नहीं अपितु सामान्य तौर पर है चाहे किसी धर्म का बादशाह हो। धर्म और आस्था के भाग पृथक हैं। क़ुर्आन में जहां-जहां ख़ुदा ने उपकारी का वर्णन किया है वहां कोई शर्त नहीं लगाई कि वह मुसलमान हो और एकेश्वरवादी हो और अमुक सिलसिले का हो अपितु सामान्य तौर पर उपकारी के बारे में चर्चा है चाहे वह कोई धर्म रखता हो और फिर ख़ुदा तआला अपने पवित्र कलाम में उपकारी के साथ उपकार करने पर बहुत बल देता है। जैसा कि निम्नलिखित आयत से प्रकट है:-

هَلْ جَزَآءُ الْاِحْسَانِ اِلَّا الْاِحْسَانُ (अर्रहमान-61)

क्या उपकार का बदला उपकार के अतिरिक्त भी हो सकता है

अब हम अपनी जमाअत को और समस्त श्रोताओं को बड़ी सफाई और स्पष्टता से सुनाते हैं कि अंग्रेज़ी सरकार हमारी उपकारी है उसने हम पर बड़े-बड़े उपकार किए हैं जिसकी आयु साठ या सत्तर वर्ष की होगी वह ख़ूब जानता होगा कि हम पर सिक्खों का एक युग गुज़रा है उस समय मुसलमानों पर जितने संकट आए थे वे छुपे नहीं हैं उनके स्मरण से शरीर कांपने लगता है और हृदय लर्ज़ जाता है। उस समय मुसलमानों की इबादतों और धार्मिक कर्त्तव्यों का पालन करना जिनका पूरा करना उनको प्राण से अधिक प्रिय है

रोका गया था। नमाज़ की बांग जो नमाज़ की भूमिका है उसको ऊंचे स्वर में पुकारने से मना किया गया था यदि कभी अज़ान देने वाले के मुख से भूल से **अल्लाहु अकबर** ऊंची आवाज़ से निकल जाता तो उसे मार डाला जाता था। इसी प्रकार से मुसलमानों के वैध-अवैध के मामले में भी अनुचित हस्तक्षेप किया गया था। एक गाय के मुकद्दमः में एक बार पांच हज़ार ग़रीब मुसलमान क़त्ल किए गए। बटाला की घटना है कि एक सय्यिद वहीं का रहने वाला बाहर से दरवाज़े पर आया। वहां गायों की भीड़ थी उसने तलवार की नोंक से थोड़ा हटाया। एक गाय के चमड़े को संयोग से हल्की सी खराश पहुंच गई। उस बेचारे को पकड़ लिया गया और इस बात पर ज़ोर दिया गया कि उस को क़त्ल कर दिया जाए। अन्त में बड़ी सिफारिशों के बाद जान से बच गया परन्तु उस का हाथ अवश्य काटा गया परन्तु अब देखो कि हर क़ौम व धर्म के लोगों को कैसी आज़ादी है। हम केवल मुसलमानों ही का वर्णन करते हैं। धार्मिक कर्त्तव्यों और इबादतों को अदा करने में सरकार ने पूर्ण आज़ादी दे रखी है और किसी के माल, प्राण और सम्मान से कोई अकारण की रोक नहीं। उस उपद्रव पूर्ण युग के विपरीत कि प्रत्येक व्यक्ति उसका हिसाब कैसा ही पवित्र हो अपने प्राण और माल पर भयभीत रहता था। अब यदि कोई अपना आचरण स्वयं ख़राब कर ले और अपने दुराचार तथा धृष्टता और अपराधों के करने से स्वयं दण्डनीय ठहर जाए तो और बात है या स्वयं ही बुरी आस्था और लापरवाही के कारण इबादत में कोताही करे तो अलग बात है। परन्तु सरकार की ओर से हर प्रकार की पूर्ण स्वतंत्रता है। इस

समय जितना आबिद (इबादत करने वाला) बनना चाहो बनो कोई रोक नहीं। सरकार स्वयं धार्मिक स्थलों का सम्मान करती है और उनकी मरम्मत इत्यादि पर हज़ारों रुपया खर्च कर देती है। सिक्खों के युग में इस के विरुद्ध यह हाल था कि मस्जिदों में भंग घुटती थी और घोड़े बंधते थे जिसका नमूना स्वयं यहां क़ादियान में मौजूद है और पंजाब के बड़े-बड़े शहरों में इसके प्रचुरता के साथ नमूने मिलेंगे। लाहौर में आजतक कई एक मस्जिदें सिक्खों के क़ब्ज़े में हैं। आज उसकी तुलना में अंग्रेज़ी सरकार इन महान स्थानों की हर प्रकार का आवश्यक सम्मान करती है और धार्मिक स्थलों का मान-सम्मान अपने कर्त्तव्यों में से समझती है। जैसा कि इन्हीं दिनों हुज़ूर वायसराय लार्ड कर्ज़न साहिब बहादुर ने देहली की जामिअ मस्जिद में जूता पहन कर जाने का विरोध अपनी व्यावहारिक हालत से सिद्ध कर दिया और सत्तायोग्य आदर्श उच्चकोटि के बादशाहों वाला शिष्टाचार दिखाया और उनके उन भाषणों से जो समय-समय पर उन्होंने विभिन्न अवसरों पर दिए हैं स्पष्ट ज्ञात हो गया है कि वह धार्मिक स्थलों का कैसा सम्मान करते हैं। फिर देखो सरकार ने कहीं मुनादी नहीं की कि कोई ऊंचे स्वर में बांग न दे या रोज़ा न रखे अपितु उन्होंने हर प्रकार के भोजन के सामान उपलब्ध किए हैं जिसका सिक्खों के नीच युग में नामोनिशान तक न था। बर्फ, सोडावाटर, बिस्किट और डबलरोटी इत्यादि हर प्रकार के भोजन उपलब्ध किए और हर प्रकार की सुविधा दे रखी है। यह एक सांकेतिक सहायता है जो इन लोगों से हमारी इस्लामी निशानियों को पहुंची है। अब यदि कोई स्वयं रोज़ा न रखे तो यह और बात

है। अफ़सोस की बात है कि मुसलमान स्वयं शरीअत को बदनाम करते हैं। अत: देखो जिन्होंने इन दिनों रोज़े रखे हैं वे कुछ दुबले नहीं हो गए और जिन्होंने निर्लज्जता के साथ इस महीने को गुज़ारा है वे कुछ मोटे नहीं हो गए। उनका भी समय गुज़र गया और उनका भी समय गुज़र गया। जाड़े के रोज़े थे। केवल खाने के समयों का एक परिवर्तन था सात-आठ बजे न खाया, चार-पांच बजे खाया। इतनी आसानी के बावजूद फिर भी बहुत से लोगों ने ख़ुदा की निशानियों को श्रेष्ठता नहीं दी और ख़ुदा तआला के इस सम्मान योग्य मेहमान **रमज़ान के महीने** को बड़े तिरस्कार से देखा। इतनी आसानी वाले महीनों में रमज़ान का आना एक प्रकार का मापदण्ड था और आज्ञाकारी तथा अवज्ञाकारी में अन्तर करने के लिए ये रोज़े तराज़ू का आदेश रखते थे। ख़ुदा तआला की ओर से सरकार ने हर प्रकार की स्वतंत्रता दे रखी है। भिन्न-भिन्न प्रकार के फल और अन्न उपलब्ध होते हैं। कोई समृद्धि और आराम का सामान नहीं जो आज उपलब्ध न हो सकता हो। इसके बावजूद जो परवाह न की गई इसका क्या कारण है। यही कि दिलों में ईमान नहीं रहा। अफ़सोस, ख़ुदा का एक तुच्छ भंगी के बराबर भी ध्यान नहीं रखा जाता। जैसे यह विचार कि ख़ुदा से कभी सम्पर्क ही न होगा और न कभी उससे पाला पड़ेगा और उसकी अदालत के सामने जाना ही नहीं होगा। काश इन्कारी विचार करें और सोचें कि करोड़ों सूर्यों के प्रकाश से भी बढ़कर ख़ुदा तआला के अस्तित्व के सबूत हैं। अफ़सोस का स्थान है कि एक जूते को देखकर निश्चित तौर पर समझ लिया जाता है कि इसका कोई निर्माता है परन्तु यह कितना

दुर्भाग्य है कि ख़ुदा तआला की असीमित सृष्टि को देख कर भी उस पर ईमान न हो या ऐसा ईमान हो जो न होने में सम्मिलित है। ख़ुदा तआला की हम पर बहुत रहमतें हैं। उनमें से एक यह है कि उसने हमें जलते हुए तन्दूर से निकाला। सिक्खों का युग एक अग्नि का तन्दूर था और **अंग्रेज़ों का क़दम** दया और बरकत का क़दम है। मैंने सुना है कि जब शुरू-शुरू में अंग्रेज़ आए तो होशियारपुर में किसी अज़ान देने वाले ने ऊंची अज़ान कही। चूंकि अभी आरंभ था और हिन्दुओं तथा सिक्खों का विचार था कि यह भी ऊंची अज़ान कहने पर रोकेंगे या उनके समान यदि गाय को किसी से ज़ख़्म लग जाए तो उसका हाथ काटेंगे उस ऊंची अज़ान कहने वाले मवज़्ज़न को पकड़ लिया। एक बड़ी भारी भीड़ के साथ डिप्टी कमिश्नर के सामने उसे ले गए। बड़े-बड़े रईस महाजन एकत्र हुए और कहा- हुज़ूर हमारे आटे भ्रष्ट हो गए, हमारे बर्तन अपवित्र हो गए। जब ये बातें उस अंग्रेज़ को सुनाई गईं तो उसे बड़ा आश्चर्य हुआ कि क्या बांग में ऐसी विशेषता है कि खाने की वस्तुएं गन्दी हो जाती हैं। उसने कर्मचारी से कहा कि जब तक अनुभव न कर लिया जाए इस मुक़द्दमे को नहीं करना चाहिए। अत: उसने मवज़्ज़न को आदेश दिया कि तू फिर उसी प्रकार बांग दे। वह डरा कि शायद दूसरा अपराध क़ायम न हो। बांग देने से थोड़ा झिझका, परन्तु जब उसको सांत्वना दी गई उसने उतने ही ज़ोर से बांग दी। साहिब बहादुर ने कहा कि हमें तो इस से कोई हानि नहीं पहुंची। कर्मचारी से पूछा कि तुम्हें कोई हानि पहुंची उसने भी कहा वास्तव में कोई हानि नहीं हुई। अन्त में उसको छोड़ दिया गया और कहा गया जाओ जिस

प्रकार चाहो बांग दो। अल्लाहु अकबर। यह कितनी आज़ादी है और अल्लाह का कितना उपकार है। फिर ऐसे उपकार और स्पष्ट इनाम पर भी यदि कोई दिल अंग्रेज़ी सरकार का उपकार महसूस नहीं करता तो वह दिल नेमत का बड़ा कृतघ्न और नमक हराम तथा सीने से चीर कर निकाल डालने के योग्य है।

स्वयं हमारे इस गांव में जहां हमारी मस्जिद है पदाधिकारी लोगों की जगह थी। उस समय हमारे बचपन का युग था। परन्तु मैंने विश्वसनीय लोगों से सुना है कि जब अंग्रेज़ों का अधिकार हो गया तो कुछ दिनों तक वही पिछला क़ानून रहा। उन्हीं दिनों एक पदाधिकारी यहां आया हुआ था। उसके पास एक मुसलमान सिपाही था। वह मस्जिद में आया और मवज़्ज़न को कहा कि बांग दो। उसने वही डरते-डरते गुनगुनाकर अज़ान दी। सिपाही ने कहा कि क्या तुम इसी प्रकार से बांग दिया करते हो। मवज़्ज़न ने कहा हां इसी प्रकार देते हैं। सिपाही ने कहा नहीं। कोठे पर चढ़कर ऊंची आवाज़ से अज़ान दो और जितने ज़ोर से संभव हो सकता है बांग दो। वह डरा। अन्त में उसने सिपाही के कहने पर ज़ोर से बांग दी। इस पर समस्त हिन्दू एकत्र हो गए और मुल्ला को पकड़ लिया। वह बेचारा बहुत डरा और घबराया कि कारदार (अनुभवी) मुझे फांसी दे देगा। सिपाही ने कहा कि मैं तेरे साथ हूं। अन्त में बेरहम छुरी मार ब्राह्मण उसको पकड़ कर कारदार के पास ले गए और कहा कि महाराज इसने हम को भ्रष्ट कर दिया। कारदार तो जानता था कि सरकार परिवर्तित हो गई है और अब वह सिक्खा शाही नहीं रही परन्तु थोड़ी दबी ज़बान से पूछा कि तूने ऊंची आवाज़ से क्यों

बांग दी? सिपाही ने आगे बढ़कर कहा कि इसने नहीं मैंने बांग दी। कारदार ने कहा कमबख़्तो क्यों शोर डालते हो। लाहौर में तो अब खुले तौर पर गाएं ज़िबह होती हैं तुम अज़ान को रोते हो। जाओ खामोश होकर बैठ रहो। अत: यह वास्तविक और सच्ची बात है जो हमारे दिल से निकलती है। जिस क़ौम ने हमको पाताल से निकाला है उसका उपकार हम न मानें तो फिर यह कितनी कृतघ्नता और नमक हरामी है।

इसके अतिरिक्त पंजाब में बड़ी असभ्यता फैली हुई थी। एक बूढ़े आदमी कम्मेशाह ने वर्णन किया कि मैंने अपने उस्ताद को देखा है कि वह बड़ी विनम्रतापूर्वक दुआ किया करते थे कि सही बुख़ारी का एक बार दर्शन हो जाए। और कभी इस विचार से कि इसका दर्शन कहां संभव है दुआ करते-करते इतना रोते कि उनकी हिचकियां बंध जाती थीं। अब वही बुख़ारी अमृतसर और लाहौर से दो चार रुपए में मिलती है। एक मौलवी शेर मुहम्मद साहब थे। कहीं से दो चार पृष्ठ 'इहयाउलउलूम' के उनको मिल गए थे। कितने ही समय तक हर नमाज़ के बाद नमाज़ियों को बड़ी प्रसन्नता और गर्व से दिखाया करते थे कि यह 'इहयाउलउलूम' है और तड़पते थे कि पूरी किताब कहीं से मिल जाए। अब हर स्थान पर छपी हुई 'इहयाउलउलूम' मौजूद है। निष्कर्ष यह कि अब अंग्रेज़ी क़दम की बरकत से लोगों की धार्मिक आंख भी खुल गई है और ख़ुदा तआला ख़ूब जानता है कि इसी सरकार के द्वारा धर्म की कितनी सहायता हुई है कि किसी अन्य सरकार में संभव ही नहीं। प्रेस की बरकत तथा भिन्न-भिन्न प्रकार के क़ाग़ज़ के आविष्कार से हर प्रकार की पुस्तकें

थोड़े-थोड़े मूल्य पर प्राप्त हो सकती हैं, फिर डाकखाने के माध्यम से कहीं से कहीं घर बैठे बिठाए पहुंच जाती हैं। और यों धर्म की सच्चाइयों के प्रचार का मार्ग कितना आसान और साफ़ हो गया है। फिर इन सब बरकतों में से एक यह भी है जो धर्म के समर्थन के लिए इस सरकार के काल में मिली है कि बौद्धिक एवं मानसिक शक्तियों में बड़ी उन्नति हुई है और चूंकि सरकार ने प्रत्येक क़ौम को अपने धर्म के प्रचार की स्वतंत्रता दी हुई है इसलिए लोगों को हर प्रकार से हर एक धर्म के सिद्धान्त और तर्कों को परखने और उन पर विचार करने का अवसर मिल गया है। इस्लाम पर जब विभिन्न धर्म वालों ने आक्रमण किए तो मुसलमानों को अपने धर्म के समर्थन और सच्चाई के लिए अपनी धार्मिक पुस्तकों पर विचार करने का अवसर मिला और उनकी बौद्धिक शक्तियों में उन्नति हुई। नियम की बात है कि जैसे शारीरिक शक्तियां व्यायाम करने से बढ़ती हैं इसी प्रकार रूहानी शक्तियां भी व्यायाम से विकसित होती हैं। जैसे कि घोड़ा चाबुक सवार के नीचे आकर सही होता है इसी प्रकार अंग्रेज़ों के आने से धार्मिक सिद्धान्तों पर विचार करने का अवसर मिला है और विचार करने वालों को अपने सच्चे धर्म में दृढ़ता और स्थायित्व अधिक मिल गया और जिस-जिस अवसर पर पवित्र क़ुर्आन के विरोधियों ने उंगली रखी वहीं से विचार करने वालों को एक मआरिफ़ का ख़ज़ाना हाथ लगा, और इस आज़ादी के कारण तर्कशास्त्र ने भी बहुत उन्नति की। और यह उन्नति विशेषत: इसी स्थान पर हुई है। अब यदि कोई रूम या शाम का रहने वाला चाहे वह कैसा ही प्रकाण्ड विद्वान क्यों न हो आ जाए तो वह ईसाइयों या

आर्यों के ऐतराज़ों का पर्याप्त उत्तर न दे सकेगा, क्योंकि उसे ऐसी आज़ादी और विस्तार के साथ विभिन्न धर्मों के सिद्धान्तों की तुलना करने का अवसर नहीं मिला। इसलिए जिस प्रकार शारीरिक तौर पर अंग्रेज़ी सरकार से देश में शान्ति हुई इसी प्रकार रूहानी शान्ति भी पूर्ण रूप से फैली। चूंकि हमारा संबंध धार्मिक एवं रूहानी बातों से है इसलिए हम प्राय: उन बातों का वर्णन करेंगे जो धार्मिक कर्त्तव्यों के अदा करने में सरकार की ओर से हमें बतौर उपकार मिले हैं। तो स्मरण रखना चाहिए कि मनुष्य पूरी आज़ादी और सन्तुष्टि के साथ इबादतों को तब ही अदा कर सकता है जब उसमें चार शर्तें मौजूद हों और वे ये हैं:-

प्रथम स्वास्थ्य:- यदि कोई व्यक्ति ऐसा कमज़ोर हो कि चारपाई से उठ न सके वह नमाज़ रोज़े का क्या पाबन्द हो सकता है और वह फिर उसी प्रकार से हज, ज़कात इत्यादि बहुत सी आवश्यक बातों के अदा करने से असमर्थ रहेगा। अब देखना चाहिए कि सरकार के कारण से हमें शारीरिक स्वास्थ्य यथावत् रखने के लिए कितने सामान मिले हैं। हर बड़े शहर और क़स्बे में कोई न कोई अस्पताल अवश्य है जहां रोगियों का उपचार अत्यन्त सहानुभूति और हमदर्दी से किया जाता है और दवा तथा भोजन इत्यादि मुफ़्त दिया जाता है। कुछ रोगियों को अस्पताल में रख कर उनकी देखभाल और संरक्षण इस प्रकार से किया जाता है कि कोई अपने घर में भी ऐसी आसानी, सुविधा और आराम के साथ उपचार नहीं करा सकता। स्वास्थ्य-रक्षा का एक अलग विभाग बना रखा है जिस पर करोड़ों रुपया वार्षिक व्यय होता है। कस्बों और शहरों

में स्वच्छता के बड़े-बड़े सामान उपलब्ध किए हैं। गन्दे पानी और रद्दी सामान जो स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है के दूर करने के लिए पृथक प्रबन्ध हैं। फिर हर प्रकार की शीघ्र प्रभाव करने वाली औषधियां तैयार करके बहुत कम मूल्य पर उपलब्ध की जाती हैं, यहां तक कि प्रत्येक व्यक्ति कुछ औषधियां अपने घर में रख कर आवश्यकता पड़ने पर उपचार कर सकता है। बड़े-बड़े मेडीकल कालेज जारी करके मेडीकल शिक्षा को बड़ी प्रचुरता से फैलाया गया है। यहां तक कि देहात में भी डाक्टर मिलते हैं। कुछ ख़तरनाक रोगों जैसे चेचक, हैज़ा, प्लेग इत्यादि के निवारण के लिए वर्तमान समय में ही प्लेग के संबंध में जितनी कार्रवाई सरकार की ओर से की गई है वह बहुत ही कृतज्ञता के योग्य है। अतः स्वास्थ्य की दृष्टि से सरकार ने हर प्रकार की आवश्यक सहायता दी है और इसी प्रकार इबादत के लिए पहली और आवश्यक शर्त के पूरा करने के लिए बहुत बड़ी सहायता की है।

दूसरी शर्त ईमान हैं। यदि ख़ुदा तआला और उसके आदेशों पर ईमान ही न रहा हो और अन्दर ही अन्दर अधर्म तथा नास्तिकता का कोढ़ लग गया हो तो भी ख़ुदा के आदेशों का पालन नहीं हो सकता। यही कारण है कि बहुत लोग कहा करते हैं- "इह जग मिट्ठा ते अलग किन डिट्ठा" अफ़सोस है दो आदमियों की गवाही पर एक अपराधी को फांसी मिल सकती है परन्तु इसके बावजूद एक लाख चौबीस हज़ार पैग़म्बर और असंख्य **वलियों** की गवाही मौजूद है परन्तु अभी तक इस प्रकार की नास्तिकता लोगों के दिलों से नहीं गई। ख़ुदा तआला हर युग में अपने शक्तिशाली **निशानों** तथा **चमत्कारों**

से **अनल मौजूद** (मैं मौजूद हूं) कहता है परन्तु ये अभागे कान रखते हुए भी नहीं सुनते। अतः यह शर्त भी बहुत बड़ी आवश्यक शर्त है। इसके लिए भी हमें अंग्रेज़ी सरकार का कृतज्ञ होना चाहिए। क्योंकि ईमान और आस्था को सुदृढ़ करने के लिए धर्म की सामान्य शिक्षा की आवश्यकता थी, और धार्मिक शिक्षा की निर्भरता धार्मिक पुस्तकों के प्रकाशन से सम्बद्ध थी। प्रेस और डाकखाने की बरकत से हर प्रकार की धार्मिक पुस्तकें मिल सकती हैं और अख़बारों के माध्यम से विचार-विमर्श का अवसर भी मिलता है। भाग्यशाली स्वभाव वाले लोगों के लिए बड़ा भारी अवसर है कि ईमान और आस्था में पैठ प्राप्त करें। इन बातों के अतिरिक्त जो आवश्यक तथा अत्यावश्यक बात ईमान की पैठ के लिए है वह ख़ुदा तआला के निशानात हैं जो उस व्यक्ति के हाथ पर घटित होते हैं जो ख़ुदा तआला की ओर से मामूर होकर आता है और अपनी कार्य-पद्धति से लुप्त हो चुकी सच्चाइयों और मारिफ़तों को जीवित करता है। इसलिए ख़ुदा तआला का कृतज्ञ होना चाहिए कि उसने इस युग में ऐसे व्यक्ति को फिर ईमान को जीवित करने के लिए मामूर किया और इसलिए भेजा ताकि लोग विश्वास की शक्ति में उन्नति करें। वह इसी मुबारक सरकार के समय में आया। वह कौन है? **वही जो तुम में खड़ा हुआ बोल रहा है** चूंकि यह मान्य बात है कि जब तक पूर्ण रूप से ईमान न हो इन्सान नेकी के कार्य पूर्णतया अदा नहीं कर सकता। जितना कोई पहलू या ईमान का किंगरा गिरा हुआ हो उतना ही इन्सान कार्यों में सुस्त और कमज़ोर होगा। इस आधार पर **वली** वह कहलाता है जिसका हर पहलू सुरक्षित हो और वह किसी पहलू से कमज़ोर न

हो, उसकी इबादतें पूर्ण रूपेण जारी होती हों। तो ईमान की दूसरी शर्त सलामती (सुरक्षा) है।

तीसरी शर्त इन्सान के लिए आर्थिक शक्ति है। मस्जिदों के निर्माण इस्लाम से संबधित मामलों की अदायगी आर्थिक शक्ति पर निर्भर है इसके अतिरिक्त सामाजिक जीवन तथा समस्त मामलों का और विशेष तौर पर मस्जिदों का प्रबंध बड़ी कठिनाई से होता है। अब इस पहलू की दृष्टि से अंग्रेज़ी सरकार को देखो सरकार ने हर प्रकार के व्यापार को उन्नति दी, शिक्षा फैला कर देश के नागरिकों को नौकरियां दीं तथा कुछ को बड़े-बड़े पद भी दिए, सफर के साधन उपलब्ध करके दूसरे देशों में जाकर रुपया कमाने में सहायता दी। अतः डाक्टर, प्लीडर अदालतों के पदाधिकारी शिक्षा विभाग के कर्मचारियों को देखो। अतः बहुत से माध्यमों से लोग उचित रुपया कमाते हैं और व्यापार करने वाले सौदागर भिन्न-भिन्न प्रकार के व्यापारिक माल विलायत और सूदूर देशों अफ्रीक़ा, आस्ट्रेलिया, इत्यादि में जाकर धनाढ्य होकर आते हैं। अतः सरकार ने रोज़गार सामान्य कर दिया है और रुपया कमाने के बहुत से माध्यम पैदा कर दिए हैं।

चौथी शर्त अमन है। यह अमन की शर्त इन्सान के अपने अधिकार में नहीं है जब से संसार पैदा हुआ है इसका अवलम्बन विशेषतः सरकार पर रखा गया है। जितनी सरकार नेक नीयत और हृदय खोट से पवित्र होगा उतनी ही यह शर्त अधिक सफाई से पूरी होगी। अब इस युग में अमन की शर्त उच्च श्रेणी पर पूर्ण हो रही है। मैं भली-भांति विश्वास रखता हूं कि सिक्खों काल के दिन अंग्रेज़ों

काल की रातों से भी कम श्रेणी पर थे। यहां से निकट ही बुट्टर* एक गांव है वहां यदि यहां से कोई औरत जाया करती थी तो रो-रो कर जाती थी कि ख़ुदा जाने फिर वापस आना होगा या नहीं। अब यह हालत हो गयी है कि मनुष्य पृथ्वी के अन्त तक चला जाए उसे किसी प्रकार का ख़तरा नहीं। सफर के साधन ऐसे आसान कर दिए गए हैं कि हर प्रकार का आराम प्राप्त है जैसे घर के समान रेल में बैठा हुआ या सोया हुआ जहां चाहे चला जाए। माल तथा प्राणों की सुरक्षा के लिए पुलिस का विशाल विभाग मौजूद है, अधिकारों की सुरक्षा के लिए अदालतें खुली है जहाँ तक चाहे जितनी भी नालिश करता चला जाए ये कितने उपकार हैं जो हमारी व्यावहारिक आज़ादी का कारण हुए हैं। तो यदि ऐसी हालत में जबकि शरीर और रूह पर असीमित उपकार हो रहे हों, हमारे अन्दर सुलह करने तथा कृतज्ञता का तत्त्व पैदा नहीं होता तो आश्चर्य की बात है? जो सृष्टि (मख़्लूक़) का धन्यवाद नहीं करता वह ख़ुदा तआला का भी धन्यवाद अदा नहीं कर सकता। कारण क्या है? इसलिए कि वह सृष्टि भी तो ख़ुदा ही की भेजी हुई होती है और ख़ुदा ही के इरादे के अधीन चलती है। अत: ये सब बातें जो मैंने वर्णन की हैं एक नेक दिल मनुष्य को विवश कर देती हैं कि वह ऐसे उपकारी का कृतज्ञ हो। यही कारण है कि हम बार-बार अपनी पुस्तकों में तथा अपने भाषणों में अंग्रेज़ी सरकार के उपकारों की चर्चा करते हैं। क्योंकि हमारा दिल वास्तविक तौर पर उसके उपकारों के आनन्द से भरा हुआ है। कृतघ्न मूर्ख लोग अपने छलपूर्ण स्वभावों पर अनुमान

---

* **बुट्टर** - यह गाँव क़ादियान से दो मील की दूरी पर है। (जमाली)

लगाकर हमारी इस कार्य-पद्धति को जो सच्चाई और निष्कपटता से पैदा होती है झूठी चापलूसी पर चरितार्थ करते हैं।

अब मैं फिर असल बात की ओर लौटते हुए बताना चाहता हूं कि ख़ुदा तआला ने इस सूरह में पहले रब्बिन्नास फ़रमाया, फिर मलिकिन्नास। अन्त में इलाहिन्नास फ़रमाया जो असली उद्देश्य और अभीष्ट मनुष्य है। इलाह मा'बूद को कहते हैं अभीष्ट, उद्देश्य को, ला इलाहा इल्लल्लाह के मायने यही हैं कि لَا مَعْبُوْدَلِیْ وَلَا مَقْصُوْدَلِیْ وَلَا مَطْلُوْبَ لِیْ إِلَّا اللّٰہُ यही सच्ची तौहीद (एकेश्वरवाद) है कि हर प्रशंसा और स्तुति का अधिकार अल्लाह तआला ही को ठहराया जाए। फिर फ़रमाया

مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ الْخَنَّاسِ (अन्नास-5)

अर्थात् भ्रम डालने वाले ख़न्नास की बुराई से शरण मांगो। ख़न्नास अरबी में सांप को कहते हैं जिसे इब्रानी में नहाश कहते हैं। इसलिए कि उसने पहले भी बुराई की थी। यहां इब्लीस या शैतान नहीं फ़रमाया ताकि मनुष्य को अपनी प्रारंभ की परीक्षा याद आए कि किस प्रकार शैतान ने उनके माता-पिता को धोखा दिया था। उस समय उस का नाम ख़न्नास ही रखा गया था। यह क्रम ख़ुदा ने इसलिए ग्रहण किया है ताकि मनुष्य को पहले वृत्तान्तों से अवगत करे कि जिस प्रकार शैतान ने ख़ुदा के आज्ञापालन से मनुष्य को धोखा देकर विमुख किया वैसे ही वह किसी समय समय के बादशाह की आज्ञा का पालन करने से अवज्ञाकारी और विमुख न करा दे। यों मनुष्य हर समय अपने नफ़्स के इरादों और योजनाओं की जांच-पड़ताल करे कि मुझ में समय के बादशाह का आज्ञापालन कितना

है और प्रयास करता रहे तथा ख़ुदा तआला से दुआ मांगता रहे कि किसी दरवाज़े से शैतान उसमें दाख़िल न हो जाए। अब इस सूरह में जो आज्ञापालन का आदेश है। वह ख़ुदा तआला ही का आज्ञापालन करने का आदेश है। क्योंकि असली आज्ञापालन उसी का है परन्तु माता-पिता मुर्शिद-व-हादी और समय के बादशाह की आज्ञा-पालन का आदेश भी ख़ुदा ही ने दिया है और आज्ञापालन का लाभ यह होगा कि ख़न्नास के क़ाबू से बच जाओगे। तो पनाह (शरण) मांगो कि ख़न्नास के भ्रम डालने की बुराई से सुरक्षित रहो। क्योंकि मोमिन एक ही सूराख से दो बार नहीं काटा जाता। एक बार जिस मार्ग से संकट आए दोबारा उसमें न फंसो। तो इस सूरह में स्पष्ट संकेत है कि समय के बादशाह की आज्ञा का पालन करो। ख़न्नास में इसी प्रकार से विशेषताएं धरोहर रखी गई हैं। जैसे ख़ुदा तआला ने वृक्ष और पानी तथा अग्नि इत्यादि वस्तुओं और तत्त्वों में गुण रखे हैं **उन्सुर** का शब्द असल में **अन-सिर्र** है। अरबी में ص और س का परिवर्तन हो जाता है। अर्थात् यह बात ख़ुदा के रहस्यों में से है। वास्तव में यहां आकर मनुष्य की जांच-पड़ताल रुक जाती है। अत: प्रत्येक चीज़ ख़ुदा ही की ओर से है चाहे वह अमिश्रित के प्रकार से हो या चाहे मिश्रित के प्रकार से। जबकि बात यह है कि ऐसे बादशाहों को भेजकर उसने हज़ारों कठिनाइयों से हमें छुड़ाया और ऐसा परिवर्तन प्रदान किया कि एक अग्नि के तन्दूर से निकाल कर ऐसे बाग़ में पहुंचा दिया जहां प्रसन्नता में वृद्धि करने वाले पौधे हैं और हर ओर नदियां जारी हैं और शीतल रुचिकर हवाएं चल रही हैं। फिर कितनी कृतघ्नता होगी यदि कोई उसके उपकारों को भुला

दे, विशेष तौर पर हमारी जमाअत को जिसको ख़ुदा ने प्रतिभा दी है और उनमें वास्तव में कपट नहीं है, क्योंकि उन्होंने जिस से संबंध पैदा किया है उसमें लेशमात्र कपट नहीं। कृतज्ञता का बड़ा उत्तम आदर्श बनना चाहिए। और मुझे पूर्ण विश्वास है कि मेरी जमाअत में कपट नहीं है और मेरे साथ संबंध पैदा करने में उनकी बुद्धिमत्ता ने ग़लती नहीं की। इसलिए कि वास्तव में मैं वही हूं जिस के आने को ईमानी प्रतिभा ने मिलने पर ध्यान दिलाया है और ख़ुदा तआला गवाह तथा अवगत है कि मैं वही **सच्चा** और **अमीन** और **मौऊद** हूं जिसका वादा हमारे सय्यिद-व-मौला सत्यनिष्ठ एवं सत्यापित रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ज़ुबान-ए-मुबारक से दिया गया था और मैं सच सच कहता हूं कि जिन्होंने मुझ से संबंध पैदा नहीं किया वे इस नेमत से वंचित हैं। प्रतिभा जैसे एक चमत्कार है। यह शब्द फ़िरासत फ़तह (ज़बर) के साथ भी है और ज़ेर के साथ भी। जब ज़बर के साथ हो तो इसके मायने हैं घोड़े पर चढ़ना। मोमिन प्रतिभा के साथ अपने नफ़्स का चाबुक सवार होता है। ख़ुदा की ओर से उसे प्रकाश मिलता है जिस से वह मार्ग पाता है। इसी लिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:-

اِتَّقُوْا فِرَاسَةَ الْمُؤْمِنِ فَاِنَّهٗ يَنْظُرُ بِنُوْرِ اللّٰهِ

अर्थात् मोमिन की फ़िरासत से डरो क्योंकि वह अल्लाह के प्रकाश से देखता है। अतः हमारी जमाअत की फ़िरासत हक़्क़ः (सच्ची फिरासत) का बड़ा सबूत यह है कि उन्होंने ख़ुदा के प्रकाश को पहचाना। इसी प्रकार मैं आशा रखता हूं कि हमारी जमाअत क्रियात्मक रंग में भी प्रगति करेगी क्योंकि वह कपटाचारी नहीं है और वह

हमारे विरोधियों की उस कार्य-पद्धति से सर्वथा पवित्र है कि जब पदाधिकारियों से मिलते हैं तो उनकी प्रशंसाएं करते हैं और जब घर में आते हैं तो काफ़िर बताते हैं। हे मेरी जमाअत! सुनो और स्मरण रखो कि ख़ुदा इस कार्य-पद्धति को पसन्द नहीं करता तुम जो मेरे साथ संबंध रखते हो और मात्र ख़ुदा के लिए रखते हो। नेकी करने वालों के साथ नेकी करो और बुराई करने वालों को क्षमा करो। कोई व्यक्ति सिद्दीक़ नहीं हो सकता जब तक वह एक रंग न हो। जो कपटपूर्ण चाल चलता है और दो रंगी ग्रहण करता है अन्त में वह पकड़ा जाता है। कहावत प्रसिद्ध है कि झूठे की स्मरण शक्ति नहीं होती।

इस समय मैं एक और आवश्यक बात कहना चाहता हूं और वह यह है कि बादशाहों को अधिकांश कठिन कार्यों का सामना रहता है और वे भी प्रजा के बचाव और सुरक्षा के लिए होते हैं। तुम ने देखा है कि हमारी सरकार को सरहद पर कई बार युद्ध करना पड़ा है। यद्यपि सरहदी लोग मुसलमान हैं परन्तु हमारे नज़दीक वे सच पर नहीं हैं। उनका अंग्रेज़ों के साथ युद्ध करना किसी धार्मिक हैसियत और पहलू से सही नहीं है और न वे वास्तव में धार्मिक पहलू से लड़ते हैं। क्या वे यह बहाना कर सकते हैं कि सरकार ने मुसलमानों को आज़ादी नहीं दे रखी? निस्सन्देह दे रखी है और ऐसी आज़ादी दे रखी है जिस का उदाहरण काबुल और काबुल के इर्द-गिर्द रहकर भी नहीं मिल सकती। अमीर की हालतें सुनने में अच्छी नहीं लगतीं। इन सरहदी उन्मादियों के लड़ने का कोई कारण पेट भरने के अतिरिक्त नहीं है। दस-बीस रुपए मिल जाएं तो उनका ग़ाज़ीपन डूब जाता है ये लोग अत्याचारी प्रकृति के हैं और इस्लाम

को बदनाम करते हैं। इस्लाम समय के बादशाह और उपकारी के अधिकारों को स्थापित करता है ये अधम प्रकृति वाले लोग अपने पेट के लिए ख़ुदा की शरीअत के अनुसार दिए जाने वाले दण्डों के नियमों को तोड़ते हैं और उनकी नीचता, मूर्खता और अत्याचार का बड़ा सबूत यह है कि एक रोटी के लिए बड़ी आसानी से एक मनुष्य को क़त्ल कर देते हैं। इसी प्रकार आजकल हमारी सरकार को ट्रेन्सवाल की एक छोटी सी प्रजातांत्रिक सरकार के साथ मुकाबला है। वह सरकार पंजाब से बड़ी नहीं है और उसकी यह सर्वथा मूर्खता है कि उसने इतनी बड़ी सरकार के साथ मुकाबला आरंभ किया है। परन्तु इस समय जब कि मुकाबला आरंभ हो गया है प्रत्येक मुसलमान का अधिकार है कि अंग्रेज़ों की सफलता के लिए दुआ करे। हमें ट्रेन्सवाल से क्या मतलब, जिसके हम पर हज़ारों उपकार हैं हमारा कर्त्तव्य है उसकी शुभेच्छा करें। एक पड़ोसी के इतने अधिकार हैं कि उसका कष्ट सुनकर उसका पित्ता पानी हो जाता है। तो क्या अब हमारे दिलों को अंग्रेज़ी सरकार के वफ़ादार सिपाहियों के कष्ट पढ़कर आघात् नहीं पहुंचता। मेरे नज़दीक वह बड़ा निर्दयी है जिसे सरकार के दुखः अपने दुखः मालूम नहीं होते, स्मरण रखो, कोढ़ कई प्रकार के होते हैं एक कोढ़ शरीर को लग जाता है जिसे कोढ़ कहते हैं और एक कोढ़ रूह को लग जाता है जिसके कारण उसे बुरी आदत पड़ जाती है कि लोगों की बुराई से प्रसन्न और भलाई से रंज होता है। अतः इस प्रकार का एक व्यक्ति हमारे यहां बाज़ार में रहा करता था यदि किसी पर कोई मुक़द्दमा हो जाता तो पूछा करता था कि मुक़द्दमे की क्या स्थिति है। यदि

किसी ने कह दिया कि वह बरी हो गया या अच्छी स्थिति है तो उस पर आपदा आ जाती और चुप हो जाता और यदि कोई कह देता कि चार्ज शीट लग गई तो बहुत प्रसन्न होता और उसे पास बैठा कर सारा क़िस्सा सुनता। तो आदमियों के स्वभाव में बुरा चाहने का तत्त्व होता है कि वे बुरी खबरें सुनना चाहते हैं और लोगों की बुराई पर प्रसन्न होते हैं, क्योंकि उनके अन्दर शैतान का चरित्र होता है। तो किसी मनुष्य के लिए बुरा चाहना अच्छा नहीं जबकि वह उपकारी भी हो। इसलिए मैं अपनी जमाअत को कहता हूं कि वे ऐसे लोगों का नमूना ग्रहण न करें अपितु पूरी हमदर्दी और सच्ची सहानुभूति के साथ ब्रिटिश सरकार की सफलता के लिए दुआ करें और क्रियात्मक तौर पर भी वफ़ादारी के नमूने दिखाएं। हम ये बातें किसी बदले या इनाम के लिए नहीं करते। हमें बदला और इनाम और सांसारिक उपाधियों से क्या मतलब। हमारी नीयतों को सर्वज्ञ ख़ुदा भली भांति जानता है कि हमारा कार्य मात्र उसके लिए और उसी के आदेश से है, उसी ने हमें शिक्षा दी है कि उपकारी का धन्यवाद करो हम इस धन्यवाद के अदा करने में अपने कृपालु मौला की आज्ञा का पालन करते हैं और उसी से इनाम की आशा रखते हैं। अत: तुम जो मेरी जमाअत हो अपनी उपकारी सरकार की ख़ूब क़द्र करो।

अब मैं चाहता हूं कि ट्रेन्सवाल के युद्ध के लिए हम दुआ करें। इति...

इसके पश्चात् हज़रत अक़्दस ने अत्यन्त जोश और निष्कपटता के साथ दुआ के लिए हाथ उठाए और सब उपस्थित लोगों ने जिनकी संख्या एक हज़ार से अधिक थी दुआ की और बहुत देर तक विजय

और सफलता के लिए दुआ की गई। तत्पश्चात् हज़रत अक़्दस ने प्रस्ताव रखा कि बर्तानवी सरकार के घायलों कि लिए चन्दा भेजना भी आवश्यक है जिसके लिए एक विज्ञापन भी प्रकाशित किया गया। जो निम्नलिखित है -

लेखक-मिर्ज़ा ख़ुदा बख़्श- क़ादियान

अपनी जमाअत के लिए एक आवश्यक विज्ञापन

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलिहिलकरीम

चूंकि हिन्दुस्तान के मुसलमानों पर सामान्यतया और पंजाब के मुसलमानों पर विशेषतया बर्तानवी सरकार के बड़े-बड़े उपकार हैं। इसलिए मुसलमान अपनी इस मेहरबान सरकार का जितना धन्यवाद करें उतना ही कम है। क्योंकि मुसलमानों को अब तक वह युग नहीं भूला जबकि वे सिक्खों की क़ौम के हाथों एक दहकते हुए तन्दूर में पड़े थे और उनके अत्याचारी हाथ से न केवल मुसलमानों की दुनिया ही तबाह थी अपितु उनके धर्म की हालत उससे अधिक बुरी थी। धार्मिक कर्त्तव्यों का अदा करना तो दूर कुछ लोग नमाज़ के लिए अज़ान देने पर जान से मारे जाते थे ऐसी दुर्दशा में अल्लाह तआला ने दूर से इस मुबारक सरकार को हमारी मुक्ति के लिए दया-वृष्टि के समान भेज दिया। जिसने आकर न केवल इन अत्याचारियों के पंजे से बचाया अपितु हर प्रकार का अमन स्थापित करके हर प्रकार के आराम के सामान उपलब्ध किए और धार्मिक स्वतंत्रता

यहां तक दी कि हम निसंकोच अपने सुदृढ़ धर्म का प्रचार अत्यन्त अच्छे ढंग से कर सकते हैं। हमने ईदुल फित्र के अवसर पर इस विषय पर विस्तारपूर्वक भाषण दिया था जिसका संक्षिप्त विवरण तो अंग्रेज़ी अख़बारों में जा चुका है और शेष विस्तृत विवरण शीघ्र ही हब्बीफ़िल्लाह मिर्ज़ा ख़ुदा बख़्श साहिब प्रकाशित करने वाले हैं। हमने इस मुबारक ईद के अवसर पर सरकार के उपकारों की चर्चा करके अपनी जमाअत को जो इस सरकार से हार्दिक निष्कपटता रखती है तथा अन्य लोगों के समान छलपूर्ण जीवन व्यतीत करना बहुत बड़ा पाप समझती है ध्यान दिलाया कि सब लोग हृदय की गहराई से अपनी मेहरबान सरकार के लिए दुआ करें कि अल्लाह तआला उसे उस युद्ध में जो ट्रेन्सवाल में हो रहा है महान विजय प्रदान करे और यह भी कहा कि अल्लाह तआला के अधिकार के बाद इस्लाम का सबसे बड़ा कर्त्तव्य प्रजा की हमदर्दी है और विशेष तौर पर ऐसी मेहरबान सरकार के सेवकों से सहानुभूति करना पुण्य का कार्य है जो हमारे प्राणों, मालों और सबसे बढ़कर हमारे धर्म की रक्षक है। इसलिए हमारी जमाअत के लोग जहां-जहां हैं अपनी सामर्थ्य और शक्ति के अनुसार बर्तानवी सरकार के उन घायलों के लिए जो ट्रेन्सवाल के युद्ध में घायल हुए हैं चन्दा दें। इसलिए इस विज्ञापन के माध्यम से अपनी जमाअत के लोगों को सूचित किया जाता है कि प्रत्येक शहर में लिस्ट पूर्ण करके और चन्दा वसूल करके 1, मार्च से पूर्व मिर्ज़ा ख़ुदा बख़्श साहिब के पास क़ादियान भेज दें क्योंकि यह ड्यूटी उनके सुपुर्द की गयी है जब आपका रुपया लिस्टों के साथ आ जाएगा तो उस चन्दे की लिस्ट को उस रिपोर्ट में दर्ज किया जाएगा जिसका

वर्णन ऊपर हो चुका है। हमारी जमाअत इस कार्य को आवश्यक समझ कर बहुत शीघ्र इसे पूरा करे।

वस्सलाम
लेखक- मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियान
10 फ़रवरी 1900ई.

ख़ुशख़बरी

10 फ़रवरी के विज्ञापन में यह इच्छा व्यक्त की गयी थी कि वृत्तान्त के साथ चन्दा देने वाले लोगों के नामों की सूची प्रकाशित की जाएगी। परन्तु चूंकि वृत्तान्त की मोटाई बढ़ गई है इसलिए हज़रत इमाम हमाम हादिए अनाम उचित नहीं समझते कि सूची प्रकाशित की जाए। बड़ी रकमें केवल कुछ थोड़े दोस्तों की ओर से पहुंची हैं और शेष बहुत कम रक़में हैं। अत: बड़ी से बड़ी रक़म اص है जो नवाब मुहम्मद अली ख़ान साहिब रईस मालेर कोटला की ओर से आई है और छोटी से छोटी रक़म तीन पाई तक है।

चूंकि हज़रत अक़्दस जनाब मसीह मौऊद अलैहिस्सलातु वस्सलाम रुपए के भेजने में अधिक विलम्ब नहीं करते हैं इसलिए विज्ञापन की निर्धारित तिथि की प्रतीक्षा करके पांच सौ रुपए की धन राशि जनाब चीफ़ सेक्रेटरी पंजाब सरकार की सेवा में भेज दी गई। अत: जो रसीद साहिब बहादुर की ओर से आई है वह आगे हम दर्ज

करते हैं। परन्तु इससे पूर्व कि हम रसीद लिखें इस बात को व्यक्त करना आवश्यक समझते हैं कि हज़रत अक़्दस उन लोगों पर जिन्होंने अपनी-अपनी सामर्थ्य और हैसियत के अनुसार बर्तानवी सरकार के घायलों, विधवाओं, और अनाथों की हमदर्दी और सहायता की है बहुत ही प्रसन्न हुए हैं और मुबारक है उन लोगों को जिन्होंने सच्चे इमाम के आदेश का पालन करके न केवल अपने पीर–व–मुर्शिद को प्रसन्न किया अपितु देश के वास्तविक बादशाह और मजाज़ी अधिकारियों की प्रसन्नता का कारण हुए। क्योंकि पृथ्वी और आकाश के बादशाह ने इस पवित्र किताब में जो मुसलमानों के हाथ में है अल्लाह के अधिकार के बाद बन्दों के अधिकार को ध्यान में रखने का कड़ा आदेश दिया है और मानव जाति की हमदर्दी को अपनी प्रसन्नता और ख़ुशी का कारण ठहराया है चाहे वह मनुष्य किसी धर्म और किसी मिल्लत का हो चाहे पूरब का हो या पश्चिम का सब की हमदर्दी का आदेश दिया है और फिर जो उपकारी और हमारे अधिकारों की रक्षा करता हो उसकी हमदर्दी प्रथम श्रेणी पर आवश्यक है। इस बर्तानवी सरकार से बढ़कर कौन अधिक उपकारी और शुभ चिन्तक है जिसने इस्लाम वालों की बहुत से अवसरों पर सहायता की है और ख़तरनाक तथा जानलेवा संकटों से मुक्ति देकर अमन और शान्ति के आंचल में स्थान दिया है।

जो चन्दा इस ग़रीब जमाअत की ओर से भेजा गया था वह उच्च प्रतिष्ठावान सरकार के मुकाबले में एक अत्यन्त थोड़ा था परन्तु इस बुलन्द हौसला सरकार ने इसे बड़े सम्मानपूर्वक स्वीकार किया, इसके अतिरिक्त प्रसन्नता भी व्यक्त की। भाग्यशाली हैं वे लोग जो

समय के पदाधिकारियों की प्रसन्नता और शोक में सम्मिलित होकर हाकिम और महकूम के पदों को दृष्टिगत रखते हैं और क्या ही बुलन्द हौसला और महान है वह सरकार जो अपनी प्रजा के गरीबों वाले चन्दों और मुबारक वादियों को मान–सम्मान की दृष्टि से देखती है। क्या यह कम कद्र बढ़ाने की बात है कि पांच सौ रुपए की तुच्छ राशि पर जनाब नवाब लेफ्टीनेन्ट गवर्नर साहिब बहादुर ने प्रसन्नता की रसीद भिजवाई और दक्षिणी अफ्रीक़ा पर विजयों की तार देने पर जनाब इमाम हम्माम हादिए अनाम को आली जनाब नवाब गवर्नर जनरल वाइसराय बहादुर प्रशंसनीय और जनाब लाट साहिब पंजाब ने अपनी-अपनी चिट्ठियों में प्रसन्नता व्यक्त की और धन्यवाद अदा किया है। बहर हाल यह सरकार कृतज्ञता के योग्य है। ख़ुदा तआला इस सरकार को जो अमन और आज़ादी की सहायक है देर तक रखे और इसे आकाशीय बादशाहत से अत्यधिक भाग प्रदान करे।

अब तीनों चिट्ठियों का अनुवाद नीचे दर्ज करते हैं ताकि दर्शक उन्हें पढ़कर प्रसन्नता प्राप्त करें।

चिट्ठी नम्बर 234

जे.एम.सी.डोई साहिब बहादुर आई.सी.एस. कायम मुक़ाम चीफ़ सेक्रेटरी पंजाब सरकार की ओर से

सेवा में मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब रईस क़ादियान, ज़िला गुरदासपुर दिनांक26 मार्च 1900ई. लाहौर से।

साहिब मन! नवाब लेफ्टीनेन्ट गवर्नर साहिब बहादुर की ओर से

निर्देश हुआ है कि हम आपको सूचना दें कि जो दरिया दिल का दान पांच सौ रुपए की राशि का आपकी और आपके मुरीदों की ओर से बर्तानवी सरकार के दक्षिणी अफ़्रीक़ा के बीमार और घायल भाईयों की सहायता के लिए भेजा है वह पहुंच गया है और किंग-किंग कम्पनी वालों को बम्बई भेज दिया गया है।

लेखक- आप का बहुत ही आज्ञाकारी सेवक जे.एम.डोई
क़ायम मुक़ाम चीफ़ सेक्रेटरी पंजाब सरकार

चिटठी नम्बर 166 दिनांक 9 मार्च 1900ई स्थान लाहौर

डब्ल्यू.आर.एच.मर्क साहिब सी.एस.आई क़ायम चीफ़ मुक़ाम सेक्रेटरी पंजाब सरकार की ओर से

सेवा में। मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब रईस क़ादियान
ज़िला-गुरदासपुर

साहिब-ए-मन! मुझे नवाब लेफ्टीनेन्ट गवर्नर साहिब बहादुर की ओर से निर्देश हुआ है कि आपको सूचना दूं कि वह आपको इस मुबारकबादी के बदले में जो आप ने उन विजयों के बारे में दी है जो बर्तानवी सरकार को दक्षिणी अफ़्रीक़ा में प्राप्त हुई हैं प्रसन्नता मिलाने वाला धन्यवाद अदा करते हैं।

आपका अत्यन्त फ़र्माबरदार सेवक
डब्ल्यू.आर.एच.मर्क साहिब क़ायम मुकाम चीफ़ सेक्रेटरी
पंजाब सरकार

चिट्ठी नम्बर 211

डब्ल्यू मर्क साहिब बहादुर सी.एस.आई. क़ायम मुक़ाम चीफ़ सेक्रेटरी पंजाब सरकार की ओर से

सेवा में मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब रईस क़ादियान

दिनांक 21 मार्च सन् 1900ई. स्थान लाहौर

साहब-ए-मन! मुझे इस बात का निर्देश हुआ है कि आपको सूचना दूं कि हिन्दुस्तान की सरकार ने बड़ी प्रसन्नता के साथ आपकी मुबारकबादी को जो आपने बर्तानवी सरकार की उन विजयों पर दी है जो दक्षिणी अफ्रीक़ा में कथित सरकार को प्राप्त हुई हैं स्वीकार फ़रमाया है।

आपका अत्यन्त फ़र्माबरदार सेवक-

डब्ल्यू.मर्क साहिब चीफ़ सेक्रेटरी पंजाब सरकार

अंग्रेज़ी चिट्ठी का अनुवाद

<u>नम्बर 307 दिनांक 18 अप्रैल सन् 1900ई.</u>

मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब निवासी क़ादियान

ज़िला- गुरदासपुर के पास रसीद वही बदील चिट्ठी

इस दफ्तर की संख्या 234 दिनांक 26 मार्च 1900ई. भेजी जाए।

आदेश द्वारा- साहिब अन्डर सेक्रेटरी पंजाब सरकार

हस्ताक्षर-साहिब अंडर सेक्रेटरी

अनुवाद रसीद अंग्रेज़ी D. NO. 1438 लार्ड मेयर का फण्ड जो ट्रान्सवाल की विधवाओं, अनाथों और घायलों की सहायता के लिए

स्थापित किया गया है स्थान बम्बई से दिनांक 31 मार्च सन् 1900ई. मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद निवासी क़ादियान, ज़िला- गुरदासपुर और उसके मुरीदों की ओर से एक राशि पांच सौ रुपय पहुंची। अत: यह चन्दा जो उपरोक्त कथित फण्ड के लिए है उचित माध्यम से राइट आदरणीय (Honourable) लार्ड मेयर साहिब बहादुर की सेवा में प्रेषित हो।

हस्ताक्षर-ख़ज़ांची किंग-किंग कम्पनी

संकलन कर्ता- मिर्ज़ा ख़ुदा बख्श क़ादियान।